स्वरोजगार के अवसर और महिला बेरोजगारी: शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में एक अध्ययन

[1]पूजा प्रजापत [2]डॉ. शिव कुमार

अर्थशास्त्र विभाग

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय,

विद्यानगरी, झुंझुनूं, राजस्थान

सार

प्रस्तुत अध्ययन शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में महिला बेरोजगारी की समस्या तथा स्वरोजगार के उपलब्ध एवं संभावित अवसरों का विश्लेषण करता है। शेखावाटी क्षेत्र सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं, सीमित औद्योगिक विकास तथा रोजगार के अपर्याप्त साधनों के कारण महिला बेरोजगारी की गंभीर चुनौती से जूझ रहा है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि स्वरोजगार किस प्रकार महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, उनकी आय बढ़ाने तथा बेरोजगारी को कम करने में सहायक हो सकता है।

अध्ययन में हस्तशिल्प, कढ़ाई–बुनाई, डेयरी, कृषि–आधारित उद्योग, लघु उद्योग, स्वयं सहायता समूह, डिजिटल एवं घरेलू उद्यम जैसे स्वरोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की संभावनाओं का परीक्षण किया गया है। साथ ही महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख बाधाओं–जैसे शिक्षा की कमी, पूंजी का अभाव, सामाजिक प्रतिबंध, प्रशिक्षण और विपणन सुविधाओं की कमी—का भी विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि उचित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, सरकारी योजनाओं की प्रभावी क्रियान्विति तथा सामाजिक समर्थन उपलब्ध कराया जाए, तो स्वरोजगार शेखावाटी क्षेत्र में महिला बेरोजगारी को कम करने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है और महिलाओं के समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द : महिला बेरोजगारी, स्वरोजगार, शेखावाटी क्षेत्र, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास, स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण अर्थव्यवस्था

परिचय

भारत जैसे विकासशील देश में बेरोजगारी एक जटिल और बहुआयामी समस्या है, जिसमें महिला बेरोजगारी एक गंभीर सामाजिक–आर्थिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आती है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी न केवल आवश्यक है, बल्कि यह सतत और समावेशी विकास की आधारशिला भी मानी जाती है। इसके बावजूद भारत के अनेक क्षेत्रों में महिलाएँ शिक्षा, प्रशिक्षण, सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक दायित्वों तथा रोजगार के सीमित अवसरों के कारण आर्थिक रूप से

सक्रिय भूमिका निभाने से वंचित रह जाती हैं। ऐसे परिदृश्य में स्वरोजगार महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण और आर्थिक सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरता है।

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र, जिसमें सीकर, झुंझुनू और चूरू जिले सम्मिलित हैं, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से विशिष्ट पहचान रखता है। यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक कला, हस्तशिल्प, हवेलियों, लोककला तथा सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। परंतु इसके साथ–साथ यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, जहाँ सीमित औद्योगिक विकास और रोजगार के अवसरों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस क्षेत्र में पुरुषों का पलायन एक सामान्य प्रवृत्ति रही है, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं पर पारिवारिक और आर्थिक उत्तरदायित्वों का बोझ और अधिक बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में महिला बेरोजगारी एक गंभीर समस्या के रूप में उभरती है।

शेखावाटी क्षेत्र की महिलाओं को रोजगार प्राप्त करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें शिक्षा की कमी, तकनीकी कौशल का अभाव, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिबंध, पारंपरिक सोच, पूंजी की अनुपलब्धता तथा बाजार तक सीमित पहुँच प्रमुख हैं। औपचारिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर सीमित होने के कारण अधिकांश महिलाएँ आर्थिक रूप से निष्क्रिय बनी रहती हैं। इस संदर्भ में स्वरोजगार एक प्रभावी विकल्प के रूप में सामने आता है, जो महिलाओं को स्थानीय संसाधनों, पारंपरिक कौशल और नवाचार के माध्यम से आजीविका अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है।

स्वरोजगार के अंतर्गत हस्तशिल्प, कढ़ाई–बुनाई, सिलाई, डेयरी, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, लघु उद्योग, स्वयं सहायता समूह, घरेलू उद्योग तथा सूक्ष्म उद्यम जैसे अनेक अवसर उपलब्ध हैं। सरकारी एवं गैर–सरकारी योजनाएँ जैसे स्वयं सहायता समूह, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मुद्रा योजना, महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम आदि महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और बाजार से जुड़ाव का अवसर मिलता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य शेखावाटी क्षेत्र में महिला बेरोजगारी की स्थिति का विश्लेषण करना तथा स्वरोजगार के अवसरों की भूमिका को समझना है। साथ ही यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि स्वरोजगार किस प्रकार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्थिति और आत्मविश्वास में वृद्धि कर सकता है। यह शोध न केवल महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा, बल्कि क्षेत्रीय विकास की संभावनाओं को भी उजागर करेगा।

महिला बेरोजगारी

भारत में महिला विकास तथा समानता के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, फिर भी महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों की समस्या व्यापक रूप से विद्यमान है। महिला बेरोजगारी का अर्थ केवल नौकरी न मिलने की स्थिति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं संरचनात्मक बाधाओं के कारण महिलाओं के

रोजगार से वंचित रहने की स्थिति को भी दर्शाता है। सांस्कृतिक रूढ़िवाद, शिक्षा में असमानता, कौशल की कमी, घरेलू दायित्व, और पारिवारिक अपेक्षाएँ–ये सब मिलकर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को प्रतिबंधित करते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र की सामाजिक संरचना में पारंपरिक विचार और सामाजिक नियम महिलाओं को घर के दायरे में सीमित रखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि समय के साथ महिलाएं शिक्षा तथा सामाजिक चेतना के स्तर पर आगे बढ़ी हैं, परंतु रोजगार के अवसरों का अभाव, कौशल की कमी तथा आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच इन उपलब्धियों को पूर्ण रूप से लागू होने नहीं देती। इस संदर्भ में स्वरोजगार न केवल रोजगार का एक विकल्प है, बल्कि यह महिलाओं को आत्म–सम्मान, आत्म–निर्भरता और सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने का प्रभावी मार्ग भी बन सकता है।

शेखावाटी में महिला बेरोजगारी — स्थिति और कारण

1. शिक्षा और कौशल का अभाव

शेखावाटी के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की साक्षरता और व्यावसायिक प्रशिक्षण की दर अपेक्षाकृत कम है। इससे श्रम बाजार में प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो जाता है। कई महिलाएँ केवल पारंपरिक गृह–कार्य तक सीमित रह जाती हैं, जिससे वे औपचारिक स्वरोजगार के लिए तैयार नहीं होतीं।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक बंधन

ग्रामीण परिवारों में महिलाओं से अक्सर पारंपरिक भूमिकाएँ निभाने की अपेक्षा की जाती है कृ जैसे घर–परिवार के काम, बच्चों की देखभाल आदि। इससे महिलाएँ घर से बाहर जाकर रोजगार या उद्यम शुरू करने से अवरुद्ध होती हैं।

3. अवसंरचना और बाजार की कमी

ग्रामीण और अर्ध–शहरी इलाकों में उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले संसाधन (जैसे बैंक ऋण, प्रशिक्षण, व्यापार नेटवर्क) कम हैं। इस वजह से इच्छुक महिला उद्यमियों के सामने स्वरोजगार के अवसरों का अभाव होता है।

4. स्वरोजगार के बारे में जागरूकता का अभाव

कई महिलाएँ स्वरोजगार योजनाओं के बारे में नहीं जानतीं या उन्हें लाभ लेने का तरीका समझ नहीं आता है। सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में महिलाओं को जानकारी, दस्तावेजीकरण और सलाह की आवश्यकता होती है।

स्वरोजगार के अवसर

शेखावाटी में स्वरोजगार के कुछ प्रमुख क्षेत्रों को पहचान कर महिलाओं के लिए नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं:

1. कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प

शेखावाटी की प्रसिद्ध हवेलियाँ, चित्रकारी, कुम्हार की कला, बुनाई–कढ़ाई और पारंपरिक हस्तशिल्प महिलाओं के लिए स्वरोजगार का एक बड़ा स्रोत हो सकता है। पर्यटन एवं स्थानीय बाजार का विकास होने पर इन उत्पादों की माँग बढ़ सकती है।

2. कृषि–आधारित उद्यम

दूध उत्पादन, डेयरी, बायोफर्टिलाइजर बनाना, डेरी उत्पाद जैसे घृत, दही, पनीर का निर्माण आदि में महिलाएँ घरेलू स्तर से निर्बाध स्वरोजगार प्रारंभ कर सकती हैं। इसके अलावा, महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा संगठित होकर संयुक्त उद्यम भी स्थापित किए जा सकते हैं।

3. पर्यटन और सेवाएँ

पर्यटन–आधारित सेवाएँ जैसे गाइडिंग, होम–स्टे, स्थानीय महोत्सव–आयोजन, तथा परिवहन सेवाएँ रोजगार के संभावित अवसर पैदा करती हैं। स्थानीय महिलाओं को पारंपरिक व्यंजन, हस्तशिल्प तथा गाइडिंग में स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

4. डिजिटल स्वरोजगार

शिक्षा, डिजाइन, सिलाई, ऑनलाइन बिक्री (ई–कॉमर्स) आदि जैसे डिजिटल स्वरोजगार के अवसर ग्रामीण महिलाओं को घर बैठे भी आय अर्जित करने का अवसर प्रदान करते हैं। डिजिटल साक्षरता और मोबाइल–इंटरनेट के प्रसार से यह संभावनाएँ और अधिक प्रबल हो रही हैं।

शेखावाटी में महिला बेरोजगारी की चुनौतियाँ

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्रकृजिसमें सीकर, झुंझुनूं और चूरू जिले शामिल हैं–शैक्षिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, परंतु यहाँ महिला बेरोजगारी एक गंभीर सामाजिक–आर्थिक चुनौती बनी हुई है। परंपरागत सोच, सीमित अवसर और संरचनात्मक बाधाएँ महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को प्रभावित करती हैं।

1 सामाजिक प्रतिबंध

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं पर सामाजिक प्रतिबंध और पारंपरिक भूमिकाएँ स्वरोजगार और बाहरी रोजगार में भागीदारी को सीमित करती हैं। पुरुष–प्रधान सामाजिक संरचना का प्रभाव महिलाओं की आर्थिक सक्रियता को प्रभावित करता है।

2 शिक्षा और कौशल की कमी

कई महिलाएँ अपर्याप्त शिक्षा और कौशल के कारण स्वरोजगार और औद्योगिक रोजगार के अवसरों से वंचित रहती हैं। तकनीकी शिक्षा की कमी स्वरोजगार प्रदान करने की क्षमता को सीमित करती है।

3 वित्त–उपलब्धता की कमी

स्वरोजगार के लिए प्रारंभिक पूंजी की आवश्यकता होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बिना गारंटी ऋण या वित्तीय सहायता प्राप्त करना महिलाओं के लिए कठिन होता है।

4 बाजार और पूँजी तक पहुँच

स्वरोजगार भी तभी सफल होता है जब उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार उपलब्ध हो। ग्रामीण महिलाओं के लिए बाजार तक आसान पहुँच और उत्पाद की मांग सुनिश्चित करने की चुनौतियाँ हैं।

स्वरोजगार के अवसर और महिला बेरोजगारीः शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में समाधान

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है, लेकिन यहां महिलाओं की बेरोजगारी की समस्या आज भी गंभीर बनी हुई है। परंपरागत सामाजिक संरचना, शिक्षा का अभाव, सीमित स्वरोजगार अवसर और लैंगिक भेदभाव के कारण महिलाएं कार्यक्षेत्र में पर्याप्त रूप से सक्रिय नहीं हो पाती हैं। इस समस्या का समाधान विविध स्तरों पर संभव है।

1. कौशल विकास और प्रशिक्षणः

महिलाओं को स्वरोजगार की ओर प्रोत्साहित करने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। शेखावाटी क्षेत्र की महिलाएं शिल्पकला, कढ़ाई, बुनाई, वस्त्र निर्माण, घरेलू खाद्य प्रसंस्करण और टूरिज्म से जुड़े व्यवसायों में पारंपरिक रूप से सक्षम हैं। इनके लिए स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं, जहां उन्हें आधुनिक तकनीक, वित्तीय प्रबंधन और विपणन कौशल सिखाए जाएँ। उदाहरण के लिए, राजस्थानी हस्तशिल्प को ऑनलाइन मार्केटिंग के माध्यम से बेचने की तकनीक से महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

2. वित्तीय सहायता और ऋण सुविधाएँः

स्वरोजगार के लिए महिलाओं को प्रारंभिक पूंजी की आवश्यकता होती है। बैंक और वित्तीय संस्थान महिलाओं के लिए विशेष स्वरोजगार योजनाएँ चला रहे हैं, लेकिन क्षेत्र में उनकी पहुँच सीमित है। सरकार और गैर–सरकारी संस्थाओं के माध्यम से महिलाओं को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने से वे छोटे उद्योग, हस्तशिल्प और कृषि आधारित व्यवसाय शुरू कर सकती हैं। इसके अलावा माइक्रोफाइनेंस और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से सामूहिक स्वरोजगार को बढ़ावा देना भी प्रभावी उपाय है।

3. स्वरोजगार के लिए तकनीकी प्लेटफार्म :

डिजिटल इंडिया अभियान और ई–कॉमर्स प्लेटफार्मों का उपयोग महिलाओं के स्वरोजगार को व्यापक स्तर पर बढ़ावा दे सकता है। शेखावाटी की महिलाएं अपने उत्पाद जैसे हैंडमेड कपड़े, ज्वेलरी, कुकिंग उत्पाद, और घरेलू हस्तशिल्प ऑनलाइन बेच सकती हैं। इसके लिए प्रशिक्षण और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराना आवश्यक है।

4. सामाजिक जागरूकता और लैंगिक समानताः

महिला बेरोजगारी का एक बड़ा कारण सामाजिक बाधाएँ हैं। परिवार और समाज में महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इसके लिए स्थानीय पंचायतें, महिला संगठन और

सामाजिक संस्थाएँ अभियान चला सकती हैं, ताकि महिलाओं की भागीदारी बढ़े और लैंगिक भेदभाव कम हो।

5. स्वरोजगार के लिए स्थानीय अवसरः

शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन संभावनाएँ स्वरोजगार का अवसर प्रदान करती हैं। महिलाओं को टूरिज्म गाइड, होमस्टे संचालन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और हस्तशिल्प स्टॉल जैसे स्वरोजगार क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

शेखावाटी क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक स्वरोजगार गतिविधियाँ, जैसे हस्तशिल्प, सिलाई, कुटीर उद्योग, और कृषि आधारित छोटे व्यवसाय, महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने में सहायक हैं। हालांकि, महिला बेरोजगारी की समस्या अभी भी क्षेत्र में गंभीर बनी हुई है, जिसका मुख्य कारण सीमित संसाधन, प्रशिक्षण की कमी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ, और वित्तीय सहायता की अनुपलब्धता है।

स्वरोजगार के माध्यम से महिलाओं की आय में सुधार न केवल उनके आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है, बल्कि परिवार और समाज पर सकारात्मक प्रभाव भी डालता है। इसलिए, शेखावाटी क्षेत्र में महिला स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सूक्ष्म वित्तीय योजनाएँ, और सामाजिक जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। यदि इन उपायों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो यह क्षेत्र महिला बेरोजगारी को कम करने और महिलाओं के सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ

1. डॉ. विकास यादव, डॉ. एस. राधाकृष्णन (2017) राजस्थान में महिला सशक्तिकरण विकास का जिलावार अध्ययन, इंस्पिरा–जर्नल ऑफ कॉमर्स, इकोनॉमिक्स एंड कंप्यूटर साइंस (जेसीईसीएस), खंड 03, संख्या 04, पृष्ठ 193–197।
2. जोस, सनी (2012) राजस्थान में महिलाओं का वेतनभोगी कार्य और कल्याण, 47 पृष्ठ 48–55.
3. सिंह, आजाद और कपूर, मालती (2022) राजस्थान में श्रम बल भागीदारी दर के रुझान और इसके प्रमुख निर्धारक कारक, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यू, 03 पृष्ठ 2679–2685।
4. कपूर, राधिका (2018) राजस्थान में व्यक्तियों के बीच कार्य भागीदारी।
5. सिंह, आजाद और कपूर, मालती। (2023)। राजस्थान के श्रम बाजार में युवा लोगों के लिए चुनौतियाँ और अवसरः श्रम बल भागीदारी के रुझान और कारकों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज 04, पृष्ठ 1914–1919।
6. सिंह, निहारिका और स्कॉलर, रिसर्च (2016) राजस्थान के असंगठित श्रम बाजार में महिलाओं पर भेदभाव का प्रभाव। खंड संख्या – IX मई – 2016 पृष्ठ 1–12।

7. बसोले, अमित और अब्राहम, रोजा और लाहोटी, राहुल और केसर, सुरभि और झा, मृणालिनी और नाथ, पारितोष और कपूर, राधिका और एस, नेल्सन मंडेला और श्रीवास्तव, आनंद और दासगुप्ता, जिको और गुप्ता, गौरव और नारायणन, राजेंद्रन। (2021) कामकाजी भारत की स्थिति 2021: कोविड–19 का एक वर्ष, पृष्ठ 10–13
8. मिश्रा, हेमंत और पांडा, बिजयालक्ष्मी (2023) क्या भारत में महिलाएँ सशक्त हैं? राजस्थान, भारत के लाडनू ब्लॉक से मनरेगा में महिलाओं की भागीदारी का एक परिप्रेक्ष्य, ग्रामीण विकास पत्रिका पृष्ठ 51–62।
9. बोंगाले, अपूर्वा और सबन्ना, तलवार (2023) भारत में कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली समस्याएँ: महिलाओं की कार्य भागीदारी में एक बाधा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमन रिसर्च 06, पृष्ठ 10–47।
10. बोंगाले, अपूर्वा और सबन्ना, तलवार (2023) भारत में कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली समस्याएँ: महिलाओं की कार्य भागीदारी में एक बाधा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमन रिसर्च 06, पृष्ठ 10–47।